كشف الشبهات في التوحيد

एकेश्वरवाद के संबंध में

संदेहों का निराकरण

تاليف

شيخ الاسلام محمد بن سليمان التميمي رحمه الله

रचना

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन सुलैमान तमीमी

مترجم

محمد شريف بن محمد شهاب الدين

अनुवादक

मुहम्मद शरीफ़ बिन मुहम्मद शिहाबुद्दीन (हैदराबादी)

प्रकाशक

दारुस्सलाम

प्रकाशक एवँ मुद्रक

पो. बक्स न. 22743 रियाध ११४१६ फोन : 4033962 फैक्स : 4021659

सऊदी अरबीया

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

अनुवादक की बात

प्रस्तुत पुस्तक, "कश्फु - श्शुबुहात फ़ि - तौहीद" का हिन्दी अनुवाद है जो, शैख़ दुक्तूर हुसैन बिन मुहम्मद आले शैख की इच्छा पर किया गया है। (अल्लाह इस उपकार को उनके कर्मपत्र में लिख दे)

अल्लाह का मुझ नाचीज़ पर अनुग्रह है कि उसने अब इस पुस्तक का और इससे पहले अन्य चार पुस्तिकाओं का हिन्दी में और एक पुस्तिका का उर्दु और तेलगु भाषाओं में अनुवाद करने का साहस और सामर्थ्य प्रदान किया जो कि उसकी कृपा से प्रकाशित हो चुकी है।

पाक प्रभु से प्रार्थना है कि वह अपनी दया से इन पुस्तकों को सामान्य मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के लिए इस्लाम की शिक्षा को समझने और उसके सम्बन्ध में अपने संदेहों को दूर करने का ज़रिया बनाए और जिन व्यक्तियों ने इस कार्य में जिस प्रकार का भी भाग लिया है उनको इसका बेहतरीन प्रत्युपकार प्रदान करे।

मुहम्मद शरीफ़

ⓒ مكتبة دار السلام ، ١٤١٧هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

محمد بن عبدالوهاب بن سليمان

كشف الشبهات في التوحيد/ ترجمة محمد شريف بن محمد شهاب الدين.ـ الرياض.

٠٠٠ ص ؛ ٠٠ سم

ردمك ٣-٩٤-٧٤٠-٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١- التوحيد ٢- العقيدة الإسلامية - دفع مطاعن ٣- التوسل

أ - العنوان ب- محمد شهاب الدين ، محمد شريف (مترجم)

ديوي ٢٤٠ ١٧/١١٢٥

رقم الإيداع : ١٧/١١٢٥

ردمـك : ٣-٩٤-٧٤٠-٩٩٦٠

بسم الله الرحمن الرحيم و به نستعين

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम व बिही नस्तईन
अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करूणामय और दयावान है और हम उसी से सहायता मांगते हैं

तुम जान लो (अल्लाह तुम पर दया करे) कि " तौहीद " अकेले अल्लाह की उपासना को कहते हैं और यह अल्लाह के रसूलों (संदेशवाहकों) का दीन (धर्म) है जिस के साथ उनको अपने दासों (मानवजाति) के पास भेजा। इनमें प्रथम रसूल (संदेशवाहक) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम हैं जिनको अल्लाह ने उनकी जाति के लोगों के पास ऐसे समय में भेजा जबकि उनकी जाति के लोग अपनी जाति के सदाचारियों से अपनी श्रद्धा के संबंध में अतिशयोक्ति को अपना लिया था जिनके नाम वद्ध , सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नसूर थे। [1]
और अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सलल्ललाहू अलैहि व सल्लम) हैं आप ही वह हैं कि जिन्होंने हज़रत नूह (अलैहि स्सलाम) की जाति की बनाई हुई मूर्तियों को तोड़ डाला। आप को अल्लाह ने ऐसे लोगों के पास अपना संदेशवाहक बनाकर भेजा था जो आराधना

करते, हज और दान पुण्य करने थे 2 परन्तु उन्होंने इसके साथ अपने और अल्लाह के मध्य संसार की कुछ चीज़ों को माध्यम ठहरा रखा था, कहते थे कि उनके साधन से अल्लाह की समीपता प्राप्त करना हमारा उद्देश्य है, और वे फ़रिश्तों, हज़रत ईसा (अलैहि स्सलाम) और अन्य सदाचार व्यक्तियों से अल्लाह के पास उनकी सिफारिश की आशा रखते हैं। ऐसे समय और ऐसे लोगों के दरमियान अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सलल्ललाहू अलैहि व सल्लम) को भेजा ताकि आप उनके पूर्वज हज़रत इबराहीम (अलैहि स्सलाम) के धर्म को नए सिरे से उनके सामने रखें और उसको फैलाएं और उनको बता दें कि यह भक्ति और श्रद्धा रखना केवल अल्लाह का अधिकार है, यह समीपता और इस प्रकार की श्रद्धा का अधिकार न किसी समीपस्थ फरिश्ते को प्राप्त है और न किसी बड़े से बड़े नबी को फिर कैसे किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त हो सकता है। अरब देश के यह अनेकेश्वरवादी इसके सिवा इस बात की साक्षय देते थे कि अकेला अल्लाह ही सृष्टा है जिसका कोई साझेदार नहीं। और इस बात की भी साक्षय देते थे कि उसके अतिरिक्त कोई जीविका देता और न कोई जीवन प्रदान करता है न कोई मृत्यु देता है, न कोई

उसके सिवा इस सारे संसार का प्रबंध करता है और यह भी कि सारे आकाश और उनके भीतर जो कुछ है और यह धरती और उसमें जो कुछ है वह सारी चीजें उसी एक अल्लाह की दासी और उसके नियन्त्रण में हैं।
यदि तुम इस बात का सबूत चाहते हो कि आप (सलल्ललाहू अलैहि व सल्लम) ने जिन लोगों के साथ युद्ध किया था वे इन बातों को मानते और इनकी साक्षय देते थे , तो तुम पवित्र कुरआन की यह आयत पढ़ लो – अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴾

अनुवाद :- उनसे पूछो कौन तुम को आकाश और धरती से रोज़ी देता है। यह सुनने और देखने की शक्तियाँ किसके अधिकार में है ? कौन निर्जीव में से सजीव को निकालता है और सजीव में से निर्जीव को निकालता है , कौन इस जगत व्यवस्था का उपाय कर रहा है वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह। कहो फिर (सत्य के विरूद्ध

चलने से) परहेज़ नही ं करते ? (सूरा यूनुस / ३१)

और फिर यह आयत भी पढ़ लो :

﴿ قُل لِّمَنِ ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴾

अनुवाद :- इनसे कहो बताओ यदि तुम जानते हो कि यह धरती और इस की सारी आबादी किसकी है ? ये अवश्य कहेंगे अल्लाह की , कहो फिर तुम होश में क्यों नही ं आते , इनसे पूछो सातों आकाशों और महान सिंहासन का स्वामी कौन है ? ये अवश्य कहेंगे अल्लाह , कहो फिर तुम डरते क्यों नही ं , इनसे कहो बताओ यदि तुम जानते हो कि हर चीज़ पर प्रभुत्व किसका है ? और कौन है जो शरण देता है और उसके मुकाबले में कोई शरण नही ं दे सकता। ये अवश्य कहेंगे कि यह बात तो अल्लाह ही के लिए है , कहो फिर कहाँ से तुमको धोखा लगता है? (सूरा अल मूमिनून / ८४ - ८९)

इनके सिवा पवित्र कुरआन में इस विषय से संबंधित आयातें और भी हैं।
अब जबकि तुमने यह बात अच्छी तरह जान ली है कि अरब के ये अनेकेश्वरादी इन सारी बातों को मानते थे परन्तु ये लोग तौहीदे उलूहियत में जिसकी ओर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनको बुला रहे थे , प्रविष्ट नही थे और यह बात भी तुमने जान ली है कि वह जिस तौहीद को न मानते थे वह तौहीदे उलूहियत 3थी। अर्थात उपासना केवल अकेले अल्लाह की की जाए और उसके साथ किसी को पुकारा न जाए , इसी तौहीद को इस ज़माने के अनेकेश्वरादी श्रद्धा (अक़ीदा) कहते हैं। और फिर इनमें से कुछ लोग फ़रिश्तों को अल्लाह से उनके निकटता और संयम का ख्याल करके पुकारते थे ताकि वे अल्लाह से उन की सिफारिश करें अथवा किसी सच्चरित्र मनुष्य जैसे "लात" 4 अथवा किसी पैग़म्बर जैसे हज़रत ईसा (अलैहि स्सलाम) को पुकारते थे। और तुमने यह भी जान लिया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इसी अनेकेश्वरवाद के विरूद्ध उनसे युद्ध किया था और उनको ईश्वर की निर्मल आराधना करने का निमंत्रण दिया जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह ने फ़रमाया है

﴿ وَأَنَّ ٱلْمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُواْ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا ﴾ :

अनुवाद :– और यह मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं अतः उनमें अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। (सूरा अलजिन्न / १८)

और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया :

﴿ لَهُۥ دَعْوَةُ ٱلْحَقِّ ۖ وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَىْءٍ ﴾

अनुवाद :– उसी को पुकारना सत्य है रहीं वे दूसरी हस्तियां जिन्हें उसको छोड़कर ये लोग पुकारते हैं वे प्रार्थनाओं का कोई उत्तर नहीं दे सकतीं। (सूरा अल रअद / १४)

और फिर तुम यह भी जान चुके हो कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इन अनेकेश्वरादियों से इसी उद्देश्य के लिए युद्ध किया था कि अल्लाह के दासी अल्लाह ही से प्रार्थना करें, हर प्रकार की नजर (मन्नत) अल्लाह ही के लिए मानें, प्रति प्रकार का बलिदान उसी के शुभ नाम से दिया जाए, प्रति प्रकार

की सहायता के लिए उसी को पुकारें, और सारी उपासनाएं केवल अल्लाह के लिए की जाएं। और फिर तुम यह जान चुके हो कि अरब के इन अनेकेश्वरादियों को, तौहीदे रूबूबियत की स्वीकृति उनको इस्लाम धर्म में प्रवेश नहीं दिला सकी।5 और फिर इन लोगों का पैग़म्बरों, ऋषियों और फ़रिश्तों के पास उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह की समीपता प्राप्त करने की आशाएं लेकर जाना इतना महापाप ठहरा कि उनकी जानों और उनके माल को हलाल ठहराया गया।

अब तुम्हें अच्छी तरह मालूम हो चुका है कि जिस तौहीद की ओर अल्लाह के संदेशवाहकों ने मानव जाति को बुलाया था और जिसको स्वीकार करने से उन्होंने इन्कार किया था, वह तौहीद "तौहीदे उलूहियत" थी जो वस्तुत: लाइलाहा इल्लल्लाह 6 का अर्थ है क्योंकि उनके पास इलाह (ईश्वर) ऐसी अस्तित्व थी जिसके पास संकटों और दुखों में सहायता माँगने जाया जाए। चाहे वह फ़रिश्ते हो अथवा कोई संदेशवाहक हो अथवा कोई ऋषि अथवा कोई पत्थर हो अथवा कोई वृक्ष हो अथवा कोई समाधि हो अथवा कोई पवित्र स्थान हो अथवा कोई जिन आदि हो किन्तु वे इनमें से किसी को भी सृष्टा, अन्नदाता और प्रबंध कुशल नहीं

मानते थे, बल्कि वे जानते और मानते थे कि यह गुण और अधिकार केवल अकेले अल्लाह के लिए है जैसा कि मैंने पहले वर्णन कर दिया है।

इनके पास इलाह (ईश्वर) का अर्थ कुछ ऐसा था जैसा कि इस ज़माने के अनेकेश्वरादी "सैय्यद "7 शब्द को प्रयोग करते हैं। तब ऐसे समय में उनके पास हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आए और उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुलाया, आप का उद्देश्य यही था कि लोग इस वचन का अर्थ जानें और उसका अभिप्राय समझें और फिर उसको स्वीकार करें। यह नही था कि केवल उसके शब्दों को अपनी ज़बान से कह ड़ालें।उस ज़माने के मूर्ख नास्तिक अच्छी तरह जानते थे कि इस वचन से अल्लाह के पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अभिप्राय क्या है, अर्थात एक अल्लाह की उपासना करना और उन सारे झूठे खुदाओं के साथ जिनको अब तक पुकारते थे, कोई संबंध न होने की घोषणा करना होगा। इसीलिए तो जब आपने उनसे कहा कि कहो "लाइलाहा इल्लल्लाह" (एक अल्लाह के सिवा कोई पूजित नही) तो उन्होंने उत्तर दिया था,

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

अनुवाद :– क्या उसने (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने) सारे उपासना पात्रों की जगह बस एक ही उपास्य बना डाला, यह तो आश्चर्य जनक बात है। (सूरा साद / ५)

अब तो तुम जान चुके हो कि वे मूर्ख नास्तिक भी इस बात को जानते थे परन्तु यह बात अत्यन्त अचंभे की है कि वह व्यक्ति जो मुसलमान होने का वादी होते हुए इस वचन (इस्लाम के कलिमा) का वास्तविक अर्थ नही ं जानता जबकि यह बात मूर्ख नास्तिक जानते हैं। बल्कि वह समझता है कि इस वचन के शब्दों को, इसके अर्थ पर अपने हार्दिक विश्वास के बिना ही केवल अपनी ज़बान से कह देना है और बस।

इनमें से जो इस्लाम में कुछ पक्के हैं वह समझते हैं कि इस वचन को स्वीकार करने का अभिप्राय बस यह है कि अल्लाह के सिवा न कोई पैदा करता है और न कोई जीविका देता है, इसलिए कहना पड़ता है कि भला ऐसे व्यक्ति से क्या अच्छाई की आशा की जा सकती है ? जिससे अधिक, इस्लाम धर्म के आधार वचन, लाइलाह इल्लल्लाह 8 के अर्थ और उसके अभियाचना को मूर्ख नास्तिक जानते हैं।

अब जबकि तुम ने उन बातो को जिनको मैंने वर्णन

किया हैं हृदय पूर्वक जान लिया और यह भी जान लिया है कि एक अल्लाह के साथ किसी और को भागीदार ठहराने का क्या अर्थ हैं, जिसके संबंध में अल्लाह ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया है :

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ﴾

अनुवाद :– अल्लाह के यहाँ बस शिर्क (अनेकेश्वरवाद) ही को क्षमा नही है इसके सिवा और सब कुछ क्षमा हो सकता है जिसे वह क्षमा करना चाहे । (सूरा अलनिसा / ११६)

और अल्लाह के उस धर्म को भी जान चुके हो जिस धर्म के साथ उसने प्रथम से अंत तक अपने संदेश वाहकों को भेजा और यह भी जान लिया है कि वह इसके सिवा किसी और धर्म को किसी से स्वीकार नही करेगा। और यह भी तुमने जान लिया है कि बहुत से लोग इस धर्म की सत्यता से अत्यन्त अपरिचित हैं। अब यह बात जान लेने के बाद इस से दो बातें खुलकर सामने आती हैं ,

१ - पहली बात यह कि अल्लाह की कृपा और उसकी दया प्राप्त होने पर मानव को प्रसन्न होना चाहिए , जैसा कि अल्लाह ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया है :

﴿ قُلْ بِفَضْلِ ٱللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِۦ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُواْ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴾

अनुवाद :- कहो कि यह अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दया है कि उसने यह चीज़ भेजी। इस पर तो लोगों को खुशी मनाना चाहिए यह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिसे लोग समेट रहे हैं। (सूरा युनूस / ५८)

२- दूसरी बात जिस पर ध्यान देना चाहिए वह है अल्लाह का "अत्यन्त भय"

जैसा कि तुम जान चुके हो कोई व्यक्ति क्यों एक शब्द अपनी ज़बान से निकालता है तो नास्तिक हो जाता है यद्यपि वह शब्द उसने अज्ञानतः कह दिया हो फिर भी उसकी क्षमा नहीं होगी, और कभी इस कल्पना से कोई शब्द कह देता है कि यह बात उसके लिए अल्लाह की समीपता पाने का साधन बनेगी जैसा कि नास्तिक व्यक्ति किया करते थे, विशेष कर यदि तुम्हें हज़रत मूसा (अलैहि स्सलाम) की जाति की कथा के संबंध मे विवेचन करने की ईश्वर शक्ति दे तो पता चलेगा कि उन्होंने सच्चरित्र और विद्यावान होते हुए भी हज़रत मूसा (अलैहि स्सलाम) के पास आकर उन से कामना की थी। पवित्र कुरआन में है :

﴿ يَٰمُوسَى ٱجۡعَل لَّنَآ إِلَٰهٗا كَمَا لَهُمۡ ءَالِهَةٞۚ ﴾

अनुवाद :– हे मूसा। हमारे लिए भी कोई ऐसी ही पूज्य बना दो जैसा कि इन लोगों के पूज्य हैं। (सूरा अल आराफ़ / १३८)

ऐसी अवस्था में उस चीज़ की इच्छा बढ़ जाएगी और अल्लाह का भय अधिकतर हो जाएगा जो तुम्हें इससे और इस जैसी अन्य चीजों से मुक्ति दिलाएगा। और हाँ। तुम्हें यह बात जान लेना और ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह की नीतियों में से एक नीति यह भी है कि उसने कभी किसी पैग़म्बर को इस तौहीद के साथ नही भेजा, परन्तु "मानव" और "जिन" जातियों में से उनके कुछ शत्रु भी पैदा कर दिए हैं जैसा कि उसने फ़रमाया है :

﴿ وَكَذَٰلِكَ جَعَلۡنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوّٗا شَيَٰطِينَ ٱلۡإِنسِ وَٱلۡجِنِّ يُوحِي بَعۡضُهُمۡ إِلَىٰ بَعۡضٖ زُخۡرُفَ ٱلۡقَوۡلِ غُرُورٗاۚ ﴾

अनुवाद :– और हमने तो इसी प्रकार सदैव शैतान मनुष्यों और शैतान जिनों को हर नबी का शत्रु बनाया है जो एक दूसरे के मन में चिकनी - चुपड़ी बातें धोखा देने के उद्देश्य से डाला करते रहे हैं। (सूरा अल अनआम / ११२)

और हाँ यह भी ध्यान रहे कि तौहीद के शत्रुओं में भी कुछ महा-विद्वान होते हैं और उनके पास भी ग्रंथों के ढेर और उनके अपने विचारों और श्रदधानुसार बहुत से सबूत भी होते हैं जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرِحُوا۟ بِمَا عِندَهُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴾

अनुवाद :– जब उन के पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो वे उसी ज्ञान में मगन रहे जो उनके अपने पास था, और फिर उसी चीज़ की लपेट में आ गए जिसकी वे हँसी उड़ाते थे। (सूरा मूमिन / ८३)

अब जबकि तुमने वे सारी बातें जान ली हैं जो ऊपर वर्णन की गई है, और फिर यह बात भी जान ली है कि ईश्वर की ओर जाने वाले मार्ग पर ऐसे कुछ शत्रु अवश्य बैठे होंगे जो विद्वान और महावक्ता और फिर शास्त्री भी होंगे, इसलिए आवश्यक है कि तुम इस्लाम धर्म शास्त्र का कम से कम इतना ज्ञान प्राप्त कर लो कि जो तुम्हारे लिए हथियार का काम दे, ताकि तुम उन शैतानों से युद्ध कर सको जिनके सेनापति और मुखिया ने प्रतापवान ईश्वर से कहा था,

﴿ قَالَ فَبِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ثُمَّ لَءَاتِيَنَّهُم مِّنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَٰنِهِمْ وَعَن شَمَآئِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَٰكِرِينَ ﴾

अनुवाद :– बोला अच्छा तो जिस प्रकार तूने मुझे गुमराही में डाला है मैं भी तेरी सीधी राह पर चलने वाले इन मनुष्यों की घात में लगा रहूँगा आगे और पीछे दायें और बायें हर ओर से इनको घेरूँगा और तू इनमें से अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा। (सूरा अल आराफ़ / १६ - १७)

परन्तु यदि तुम अल्लाह का ध्यान करो और अपने पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में वर्णन किए हुए प्रमाण और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीसों में आई हुई बातों पर विचार करो और उनको उत्तर देकर निश्चिंत हो जाओ फिर उससे डरने की कोई ज़रूरत नहीं। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ إِنَّ كَيْدَ ٱلشَّيْطَٰنِ كَانَ ضَعِيفًا ﴾

अनुवाद :– विश्वास रखो कि शैतान की चालें वास्तव में बहुत ही कमज़ोर हैं। (सूरा अल निसा / ७६)

एक सामान्य एकेश्वरवादी इन अनेकेश्वरवादियों के

हज़ार विदवानों पर विजयी होगा। जैसा कि अल्लाह ने कहा है :

﴿ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ ٱلۡغَٰلِبُونَ ﴾

अनुवाद :– और हमारी सेना ही विजयी होकर रहेगी। (सूरा साफ़्फ़ात / १७३)

अल्लाह के सिपाही सबूत और ज़बान से विजयी होते हैं। जबकि अनेकेश्वरवादी तलवार और भालों से सफल होते हैं। परन्तु उस एकेश्वरवादी के बारे में डर है जो तौहीद के रास्ते पर चल तो रहा हो परन्तु उसके पास हथियार न हो। जबकि अल्लाह ने हम पर अनुग्रह किया है कि उसने - हमें ऐसी किताब प्रदान की है जो प्रत्येक विषय को साफ़ - साफ़ स्पष्ट करने वाली है , और वह मुसलमानों के लिए मार्ग दर्शन और दयालुता और शुभ सूचना है।

और अब अनृतयाकार इसके विरूद्ध कोई सबूत पेश नहीं कर सकता जो प्रमाण भी पेश करेगा उसका तोड़ कुरआन में उपलब्ध है और इसका ग़लत होना प्रमाणित कर देता है जैसा कि ईश्वर ने फ़रमाया है , पवित्र कुरआन में है :

﴿ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴾

अनुवाद :– और (इसमें यह प्रयोजन भी है कि) जब कभी वह तुम्हारे सामने कोई निराली बात (या विचित्र प्रश्न) लेकर आएं उसका ठीक उत्तर समय पर हमने तुम्हें दे दिया और उत्तम ढंग से बात खोल दी। (सूरा अल फ़ुरक़ान /३३)

पवित्र क़ुरआन में, भाष्यकारों ने कहा है कि, यह आयत सत्य के विरुद्ध हर उस सबूत का उत्तर है जो अनृत्य प्रिय अपने मनानुसार महाप्रलय तक पेश करेंगे। और मैं यहाँ इनमें से कुछ बातों का वर्णन करता हूँ जिनका उन लोगों की आपत्तियों के उत्तरों के रूप में अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में वर्णन किया है जो हमारे ज़माने के अनेकेश्वरवादी हमारे विरूद्ध असंतोष प्रकट करते हैं, हम कहते हैं कि अनृत्य प्रिय व्यक्तियों का उत्तर दो प्रकार का हो सकता है :

१- सार रूप से, २- सविस्तार रूप से।

जहाँ तक सार रूप में उत्तर का विषय है वह अति महान और फिर बुद्धिमान के लिए बड़े लाभ की बात है।

जैसा कि अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया :

﴿ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ مِنْهُ ءَايَٰتٌ مُّحْكَمَٰتٌ هُنَّ أُمُّ
ٱلْكِتَٰبِ وَأُخَرُ مُتَشَٰبِهَٰتٌ ۖ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا
تَشَٰبَهَ مِنْهُ ٱبْتِغَآءَ ٱلْفِتْنَةِ وَٱبْتِغَآءَ تَأْوِيلِهِۦ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُۥٓ إِلَّا
ٱللَّهُ ۗ وَٱلرَّٰسِخُونَ فِى ٱلْعِلْمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ وَمَا
يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴾

अनुवाद :- वही तो है जिसने यह पुस्तक तुम पर अवतरित की है। इस पुस्तक में दो प्रकार की आयतें हैं, एक अटल, जो पुस्तक का मूल आधार हैं और दूसरी उपलक्षित, जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे बिचलाने की चाह में सदैव उपलक्षित के ही पीछे पड़े रहते हैं और उनको अर्थ पहनाने का प्रयास किया करते हैं। (सूरा आलि इमरान / ७)

और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह प्रवचन शुद्ध पद्धति से वर्णन किया गया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है :
जब तुम उन लोगों को देखो जो सदृश्य आयतों के पीछे पड़े हुए हैं, यही वे लोग हैं जिनका अल्लाह ने विषेशकर ज़िकर किया है, इसलिए उन से बच कर रहो। (त्रिमिजि शरीफ़ / २)

उदाहरण के लिए हो सकता है कि अनेकेश्वरवादी कुरआन की यह आयत पढ़कर सुनाए

﴿أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾

अनुवाद :- सुनो। अल्लाह के जो मित्र हैं उन के लिए किसी भय और शोक का अवसर नहीं है। (सूरा यूनुस / ६२)

और फिर कहे कि अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश तो यथार्थ है और पैग़म्बरों को ईश्वर के पास एक विशेष मान प्राप्त है।

अथवा यह व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कोई प्रवचन भी बयान कर सकता है ताकि उसको अपने किसी अशुद्ध श्रद्धा की अनुकूलता के लिए प्रयोग करे परन्तु तुम यदि उस प्रवचन का वास्तविक अर्थ नहीं जानते हो तो तुम उसको निम्न लिखितानुसार उत्तर दो , उससे कहो :

" अल्लाह ने क़ुरआन में वर्णन किया है कि – जिन लोगों के दिलों में टेढ़ होता है वे अटल बातों को छोड़ देते और उपलक्षित बातों के पीछे पड़े रहते हैं। " (सूरा आलि इमरान / ७)

और फिर उसको यह बात भी सुना दो जो मैं अभी बता चुका हूँ , अर्थात अल्लाह ने वर्णन किया है कि अनेकेश्वरवादी भी उसकी " रूबूबियत " के स्वीकर्ता थे

परन्तु उनका कुफ़्र वस यह था कि वे फ़रिश्तों और रसूलों और ऋषियों के साथ अपना नाता जोड़ते और कहते थे कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं और उनको अपने और ईश्वर के दरमियान माध्यम ठहराते थे जैसा कि अल्लाह ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया है :

﴿ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ﴾

अनुवाद :-" और वे कहते हैं ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं "। (सूरा यूनुस / १८)

यह एक पक्की और साफ़ बात है जिसके अर्थ को कोई बदल नही सकता, और हे अनेकेश्वरवादी तूने कुरआन अथवा ईश्दूत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्रवचनों में से जो कुछ मेरे सामने वर्णन किया है मैं उनका वास्तविक अर्थ तो नही जानता परन्तु पूरे विश्वास के साथ मैं यह बात कह सकता हूँ कि अल्लाह का एक प्रवचन उस के दूसरे प्रवचन का प्रतिकुल नही होता।

और इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कोई प्रवचन अल्लाह के किसी प्रवचन के विरूद्ध नही होता।

यद्यपि यह उसका उचित उत्तर है परन्तु उसको नही

समझेगा मगर वह व्यक्ति जिसको अल्लाह सामर्थ्य दे इसलिए तुम उसको तुच्छ न जानो10 जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ وَمَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا ٱلَّذِينَ صَبَرُواْ وَمَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴾

अनुवाद :– और यह गुण प्राप्त नही होता किन्तु उन लोगों को जो धैर्य से काम लेते हैं , और यह पद प्राप्त नही होता किन्तु उन लोगों को जो बड़े भाग्यवान हैं। (सूरा हा०मीम० अस-सजदा / ३५)

अब सविस्तार उत्तर निम्नलिखित हैं :

यूं तो ईश्वर के शत्रुओं की आपत्तियां अधिकतर हैं जिनके द्वारा वे लोगों को दीन धर्म से रोकते हैं उनमें से कुछ यह हैं।

१ - वे कहते हैं कि हम किसी को अल्लाह का भागीदार नहीं बनाते बल्कि हम तो साक्षय देते हैं कि अकेले अल्लाह को छोड़कर जिसका कोई भागीदार नहीं न कोई पैदा करता है न कोई वृत्ति देता है न कोई लाभदायक है और न कोई हानिकारक है। और यह भी कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) स्वयं अपने को भी न लाभ पहुँचाने की शक्ति रखते हैं और न

हानि पहुंचाने की , फिर शैख़ अब्दुल क़ादिर अथवा उनके अतिरिक्त किसी और को यह शक्ति और साहस कैसे प्राप्त हो सकती है। परन्तु मैं एक पापी हुँ और सदाचारियों को ईश्वर के पास मर्यादा और सम्मान प्राप्त है इसलिए मैं उनके साधन से अल्लाह से मांगता हूँ ।

तो उसको भी वही उत्तर दो जो पहले वर्णन किया गया है , और वह यह है कि ईश दूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जिन लोगों से युद्ध किया था वे भी यह बात मानते थे जो तुमने बयान की है। और इस बात को भी मानते थे कि उनकी मूर्तियाँ किसी चीज़ का प्रबंध नहीं करती हैं परन्तु वे बस अल्लाह के पास उनकी प्रतिष्ठा और अभिस्ताव की आशा रखते थे और उनको वे आयात पढ़ कर सुनाओ जिस को अल्लाह ने अपनी किताब में वर्णन किया है और उसकी व्याख्या भी की है , यदि वह कहे कि यह आयात उन लोगों के संबंध में उतरी हैं जो मूर्तियों को पूजते थे फिर कैसे तुम अल्लाह के सदाचारियों को मूर्तियां कहते हो और कैसे नबियों को मूर्तियाँ कहते हो - उसको भी वह उत्तर देना चाहिए जो इससे पहले वर्णन किया जा चुका है।

फिर जब वह इस बात को मान लें कि नास्तिक अल्लाह

ही के लिए हर प्रकार की रूबूबियत 11 की साक्षय देते थे और उनका उद्देश्य अल्लाह के यहाँ उनके अभिस्ताव के सिवा और कुछ न था।

परन्तु वह अपनी उपयुक्त बात से उनके कार्य और अपने कार्य के भीतर अन्तर जताना चाहता है अब तुम उसको यह बतलाओ कि नास्तिकों में से कुछ व्यक्ति सदाचारियों और मूर्तियों को पुकारते थे और कुछ अन्य व्यक्ति ऋषियों को पुकारते थे जिनके संबंध में अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَدۡعُونَ يَبۡتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ ٱلۡوَسِيلَةَ أَيُّهُمۡ أَقۡرَبُ ﴾

अनुवाद :– जिन को ये लोग पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने प्रभु के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूंढ रहे हैं कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए।(सूरा अल इसरा / ५७)

इसके सिवा यह लोग हज़रत ईसा (अलैहि स्सलाम) और उनकी माता मरियम (अलैहि स्सलाम) को भी पुकारते थे जबकि क़ुरआन में अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ مَّا ٱلۡمَسِيحُ ٱبۡنُ مَرۡيَمَ إِلَّا رَسُولٞ قَدۡ خَلَتۡ مِن قَبۡلِهِ ٱلرُّسُلُ وَأُمُّهُۥ صِدِّيقَةٞۖ كَانَا يَأۡكُلَانِ ٱلطَّعَامَۗ

ٱنظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ ٱلْـَٔايَـٰتِ ثُمَّ ٱنظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝

अनुवाद : - मसीह सुत मरियम इसके सिवा कुछ नही कि बस एक रसूल था, उससे पहले और भी बहुत से रसूल हो चुके थे , उसकी माता एक सत्यवती स्त्री थी , और वह दोनों भोजन करते थे। देखो हम किस प्रकार उनके समक्ष यथार्थ की निशानियाँ स्पष्ट करते हैं फिर देखो यह किधर उल्टे फिर जाते हैं। (सूरा अल माइदा / ७५)

और अल्लाह का यह प्रवचन भी उनको सुनाओ :

۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَـٰٓئِكَةِ أَهَـٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا۟ سُبْحَـٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ۝

अनुवाद : - और जिस दिन वह समस्त मनुष्यों को एकत्र करेगा फिर फ़रिश्तों से पूछेगा " क्या ये लोग तुम्हारी ही उपासना किया करते थे " ? तो वे उत्तर देंगे कि " पवित्र है आपकी सत्ता , हमारा संबंध तो आप से है न कि इन लोगों से " । वास्तव में हमारी नही बल्कि जिन्नों की उपासना करते थे , इनमें से अधिकतर उन्ही पर ईमान लाए हुए थे। (सूरा अल सबा / ४० , ४१)

अब तुम उससे कहो , क्या तुम्हें मालूम है कि अल्लाह ने उस व्यक्ति को नास्तिक बताया है जो मूर्तियों के पास जाता है और उसको भी नास्तिक बताया है जो सदाचारियों के पास जाता और उनसे अपनी ज़रूरतें मांगता है। और उनके साथ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध किया, यदि वह कहे कि नास्तिक व्यक्ति तो उनसे अपने उद्देश्य मांगते थे और मैं तो साक्षय देता हूँ कि अल्लाह ही लाभदायक और नष्टकारक और प्रबंध कुशल है। मैं उसको छोड़ कर किसी दूसरे से कुछ नही मांगता और मैं मानता हूँ कि सदाचारियों को किसी प्रकार का अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त नही है , परन्तु मैं उनके पास अल्लाह से हमारे लिए सिफारिश की आशा से जाता हूँ।

अब तुम उसको यह उत्तर दो कि तुम्हारा यह कथन नास्तिकों के कथन के ठीक बराबर है। फिर उसको अल्लाह का यह प्रवचन पढ़कर सुनाओ , कुरआन में है :

﴿مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلْفَىٰٓ﴾

अनुवाद : - (और अपने कर्म का कारण यह बताते हैं कि) हम तो उनकी उपासना केवल इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी पहुँच करा दें । (सूरा अल जुमर / ३)

और एक स्थान पर फ़रमाया :

और यह कहतें हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं। (सूरा अल यूनुस / १८)

और तू जान ले यह तीन आशंकाएं उनके मुख्य आशंकाएं हैं। और जब तू जान ले कि अल्लाह ने अपनी किताब में उनको स्पष्ट कर दिया है , और तूने उनको पूरी तरह समझ भी लिया है। तो इनके अतिरिक्त अन्य आशंकाएं तो इनके उत्तर उनके सामने बहुत सरल हैं।

अब यदि वे कहे कि –

मैं तो अल्लाह को छोड़ कर किसी और की पूजा नही करता और मैं समझता हूँ कि सदाचारियों से निवेदन करना और उनसे प्रार्थना करना उपासना नही है।

अब उनसे पूछो कि –

क्या तुम यह बात मानते हो कि अल्लाह ने अपनी निषकेवल उपासना तुम पर फ़र्ज की है। यह उसका तुम पर हक़ है।

अब यदि वह इसको मान ले तो अब तुम उससे पूछो भला तुम ही बताओ कि वह आराधना कौन सी है जो तुम पर लागू की गई है और वह अकेले , अल्लाह की निमर्ल आराधना है , और वह तुम पर उसका हक़ है।

परन्तु तुम्हें जानना चाहिए कि वह न आराधना का अर्थ जानता है और न उसके विभागों को और न उसके आदेशों को इसलिए स्वयं तुम ही यह सारी बातें इस प्रकार उसको समझाओ और बताओ कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ ٱدْعُوا۟ رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴾

अनुवाद :– अपने प्रभु को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके- चुपके , निःसंदेह वह सीमा को लांधने वालों को पसंद नहीं करता। (सूरा अल आराफ़ / ५५)

उससे पूछो कि भला बताओ तो यदि तुम अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए उससे प्रार्थना करोगे तो क्या यह आराधना न होगी ? वह ज़रूर कहेगा हाँ क्यों नहीं ।

और दुआ तो आराधना का सार है। (जामे तिर्मिज़ी , प्रति ३,१७३)

अब तुम उससे कहो जबकि तुम इस बात को मानते हो कि किसी को अपनी ज़रूरत के लिए पुकारना आराधना है , और तुम रात - दिन आशा और भय के साथ अल्लाह को पुकारो। और फिर इसी आवश्यकता के लिए किसी नबी अथवा वली को पुकारो तो क्या तुम ऐसा करके

अल्लाह की आराधना में किसी और को शरीक नही बना रहे हो । जबकि अल्लाह ने हमें आज्ञा दी है कि :

अनुवाद :– अतः तुम अपने प्रभु ही के लिए नमाज़ पढ़ो और कुरबानी करो। (सूरा अल कौसर / २)

और फिर तुमने उसकी आज्ञा का पालन किया और उसके नाम पर बलि किया तो क्या तुम्हारा यह कर्म उपासना नही है ? तो वह ज़रूर कहेगा हाँ ! अब तुम उससे पूछो उसके साथ यदि तुमने किसी प्राणी वर्ग जैसे नबी अथवा जिन्न अथवा किसी और के लिए बलिदान दो तो क्या तुम्हारा ऐसा करना इस आराधना में अल्लाह के सिवा किसी और को भागीदार बनाना हुआ या नही ? वह ज़रूर इसका इक़रार करेगा और कहेगा हाँ !

फिर तुम उससे यह भी पूछो कि वे अनेकेश्वरवादी जिन के मध्य कुरआन उतरा क्या वे फ़रिश्तों, सदाचारियों, लात इत्यादियों की पूजा नही करते थे ? वह ज़रूर कहेगा हाँ । अब तुम उसको बताओ कि वे जो उनकी आराधना करते थे इसके सिवा और क्या थी कि वे अल्लाह को छोड़कर औरों को पुकारते ,

उनके नाम पर बलिदान देते और उनका शरण लेते और इसी प्रकार के दूसरे क्रिया - कर्म करते थे। वैसे तो वे भी यह मानते थे कि फरिश्ते , पैग़म्बर और सदाचारी आदि सब ईश्वर के सेवक उसके आधीन हैं , और वे यह बात भी मानते थे कि ईश्वर ही सारे संसार का प्रबंधकर्ता है , परन्तु इसको स्वीकार करके भी वे कठिनाइयों में पैग़म्बर और ऋषियों को पुकारते और उनके पद के अनुसार और अभिस्ताव की आशा से उनका शरण लेते थे , और यह ढकी छुपी नही बल्कि नितांत बात है फिर यदि वह कहे कि - क्या आप अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अभिस्ताव के अधिकार की अस्वीकृति करते हो और उस पर विश्वास नही रखते हो ? तुम उसको उत्तर दो कि मैं न उसका निवर्ती हूँ और न उसके संबंध में मुझे शंका है । बल्कि मैं आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शाफ़िअ और मुशफ़्फ़ा मानता हूँ ।11

और मैं आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अभिस्ताव की आशा रखता हूँ परन्तु अभिस्ताव तो ईश्वर के अधिकार में है , जैसा कि अल्लाह ने कहा है :

﴿قُل لِّلَّهِ ٱلشَّفَـٰعَةُ جَمِيعًا﴾

अनुवाद :– कहो सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है। (सूरा अल जुमर / ४४)

इसके अतिरिक्त आप किसी की सिफारिश उस समय करेंगे जबकि अल्लाह आज्ञा दे , जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ﴾

अनुवाद :– कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके। (सूरा अल बक़रा / २५५)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किसी के संबंध में अभिस्ताव नहीं करेंगे मगर उस समय जबकि अल्लाह आपको उसके लिए आज्ञा दे , जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ﴾

अनुवाद :– वे किसी की सिफारिश नहीं करते सिवाय उसके जिसके हक़ में सिफारिश सुनने पर अल्लाह राज़ी है। (सूरा अल अंबिया / २४)

और यह मालूम ही है कि अल्लाह तौहीद के सिवा किसी

और बात को पसंद नहीं करता जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾

अनुवाद :– और इस इस्लाम धर्म के सिवा जो व्यक्ति कोई और प्रणाली अपनाना चाहे उस का धर्म कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और परलोक में वह असफल रहेगा। (सूरा आलि इमरान / ८५)

अब जबकि तुम जान चुके हो कि अभिस्ताव का पूर्ण अधिकार अल्लाह को है और उसकी आज्ञा के बिना अभिस्ताव नहीं हो सकता। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और न अन्य किसी के संबंध में अनुशंसा नहीं करेंगे जब तक कि अल्लाह उसकी आज्ञा न दे, और वह एकेश्वरवादी के सिवा किसी और के लिए अनुमति नहीं देता तो इससे मालूम हुआ कि अनुशंसा का सारा अधिकार बस अल्लाह ही के हाथ में है। इसलिए मैं उसको उसी से मांगता हूँ, और यह प्रार्थना करता और कहता हूँ :

हे! अल्लाह मुझे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सिफारिश से वंचित न कर। हे अल्लाह! मेरे संबंध

में उनकी सिफारिश को स्वीकार कर।
और इस प्रकार की अन्य प्रार्थनाएं।
अब यदि वह कहे कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अनुशंसा का हक़ पहले ही से दिया हुआ है और मैं उनसे वही मांगता हूँ जिसका अधिकार अल्लाह ने उनको दिया है इस का उत्तर यह है कि अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अनुशंसा का हक़ तो दिया है परन्तु तुझको उनसे मांगने से मनाही कर दी है। अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ وَأَنَّ ٱلْمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا ﴾

अनुवाद :– अतः उनमें अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। (सूरा अल जिन्न / १८)
फिर इसके साथ अनुशंसा का हक़ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अतिरिक्त दूसरों को भी दिया गया है, जैसा कि यथार्थ साधन से प्रमाणित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया है कि – फरिश्ते अभिस्ताव करेंगे सदाचारी भी सिफारिश करेंगे।
तो क्या तू यह कह सकता है कि – अल्लाह ने उनको अभिस्ताव का अधिकार दिया है इसलिए मैं उनसे

मांगूंगा, और यदि तू यह कहता है तो गोया फिर सदाचारियों की आराधना करने की बात होगी जिसको अल्लाह ने अपनी किताब में बयान किया है। और यदि तू इन्कार करे तो तेरा यह वचन अर्थात : " अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अनुशंसा का अधिकार दिया है और मैं आप से वही मांग रहा हूँ, जो अल्लाह ने उनको दिया है। "असत्य हो जाएगा।

अब यदि वह कहे कि मैं अल्लाह के साथ हरगिज़-हरगिज़ किसी को साझी नहीं बनाता परन्तु सदाचारियों से अनुशंसा मांगना शिर्क नही है । तब उससे पूछो जबकि तू इस बात को मानता है कि अल्लाह ने शिर्क को व्याभिचार से भी बड़ा पाप बताया है और यह भी बताया है कि अल्लाह शिर्क को क्षमा नहीं करेगा।

तो किस कारण से अल्लाह ने उसको महापाप कहा है, और क्यों बताया है कि अल्लाह शिर्क को क्षमा नहीं करेगा ?

खुली बात यह है कि इसका असल कारण वह नहीं जानता इसलिए तुम उससे कहो कि यदि तू शिर्क की वास्विकता को नहीं जानता है तो फिर कैसे उससे अपने को बचाएगा अथवा अल्लाह उसको तुझ पर कैसे

निषिद्ध करता है और यह भी कहता है कि उसको क्षमा नहीं करेगा और फिर तुम उसके संबंध में किसी से पूछते भी नहीं और तुम स्वयं उसको जानते भी नही हो। अथवा तुम्हारा विचार यह है कि अल्लाह ने उसको हमें उसके संबंध में कुछ बताए बिना ही निषिद्ध कर दिया है ? अब यदि वह कहे कि शिर्क मूर्तियों की पूजा का नाम है और हम तो मूर्तियों की पूजा नहीं करते।

फिर तुम उससे पूछो अच्छा यह बताओ मूर्ति पूजा का क्या अर्थ है। क्या तू यह समझता है कि वे लोग यह विश्वास रखते हैं कि यह लकड़ियों और यह पत्थर चीज़ों को पैदा करते और रोज़ी देते हैं। और उस व्यक्ति का काम बना देते हैं जो उनको पुकारता है, तेरा यह ख्याल ग़लत है। कुर्आन उसको झुठलाता है। और यदि वह कहे कि वे लोग किसी लकड़ी के पास अथवा किसी पत्थर के पास अथवा किसी भवन के पास अथवा अन्य स्थानों के पास जाते थे और उनको पुकारते थे और उनके लिए बलिदान देते थे और कहते हैं कि निःसंदेह हमारा यह कार्य हमको अल्लाह की समीपता दिलाता है और उसके साधन से किसी विपत्ति को दूर कर देगा।

तुम कहो कि , तुम्हारा यह कथन सत्य है , परन्तु पत्थरों और उन भवनों के पास जो समाधियों आदि के ऊपर

बनाए गए हैं – वहाँ तुम भी उन्ही जैसे कर्म करते हो। उसका अब इस बात को मानना गोया यह मानना है कि उन लोगों का यह कर्म मूर्तियों की आराधना है। और उससे यह पूछा जाएगा कि तेरा यह कहना कि " शिर्क मूर्तियों की आराधना का नाम है, क्या इससे तुम्हारा उद्देश्य यह है कि शिर्क इसके साथ ख़ास है ? और यह कि सदाचारियों का आश्रय करना और उनको पुकारना इसमें सम्मिलित नही होगा ? परन्तु यह बात ऐसी है कि इसको वह बात रद्द करती है जो अल्लाह ने अपनी किताब में उस व्यक्ति का नास्तिक होना बताया है जो फ़रिश्तों और हज़रत ईसा (अलैहि स्सलाम) और सदाचारियों से संबंध जोड़ता है। यहाँ पहुचँ कर वह अवश्य मान जाएगा कि जो व्यक्ति अल्लाह की आराधना में किसी सदाचारी को सम्मिलित करेगा तो यही वह शिर्क है जो कुर्आन में वर्णन किया गया है, और यही हमारा उद्देश्य है।

और मूल समस्या यह है कि –जब वह कहे कि यह अल्लाह के साथ किसी को शरीक नही ठहराता तो तू उससे कह आख़िर अल्लाह के साथ शिर्क का क्या अर्थ है ? यदि वह कहे " शिर्क मूर्तियों की पूजा है " अब पूछो कि "मूर्तियों की पूजा का क्या अर्थ है ?" उसको

वणर्न कर , अब यदि वह कहे "मैं अकेले अल्लाह के अतिरिक्त किसी की पूजा नही ं करता " ।
अब इससे कह – इस वाक्य " अकेले अल्लाह के अतिरिक्त किसी की पूजा न करने का अर्थ क्या है ?" वणर्न करो।
अब यदि वह उसके उत्तर में कुऱआन के बयान अनुसार वणर्न करे तो ठीक है , और यदि वह उसको न जानता हो तो फिर कैसे ऐसी बात का दावा कर सकता है ? परन्तु यदि वह कुऱआन के वर्णन के विरूद्ध उसका अर्थ बताए तो उसके सामने अल्लाह के साथ शिर्क के अर्थ और मूर्तियों की पूजा के संबंध में जो आज भी लोग पहले की प्रकार कर रहे हैं कुऱआन की रौशन आयात की व्याख्या करो और यह भी बता दो कि निषकेवल एक अल्लाह की जिसका कोई साझी नही ं आराधना की यही समस्या है जिसको आज लोग बुरा मानते हैं और हमारे विरूद्ध शोर हल्ला करते हैं , जैसा कि पहले ज़माने में उनके भाईयों ने किया और कहा था :
क्या उसने सारे उपासना पात्रों की जगह बस एक ही उपास्य बना डाला। यह तो बड़ी अजीब बात है (सूरा साद / ५)
अब जब कि तू जान चुका है कि यह बात जिसको

अनेकेश्वरवादि श्रद्धा कहते हैं वही शिर्क है , जिसके बारे में कुर्आन उतारा गया है और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जिसके लिए युद्ध किया तुम्हें जानना चाहिए कि भूतकालों के लोगों का शिर्क हमारे इस युग के लोगों के शिर्क से दो पक्षों से हल्का था।

१- एक तो यह बात कि प्राचीनकाल के लोग न शिर्क करते थे और न फ़रिश्तों और ऋषियों को अल्लाह के साथ पुकारते थे परन्तु केवल खुशियों के अवसर पर। इसके विपरीत कठिनता के समय में अल्लाह की निर्मल आराधना करते थे , जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿وَإِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فِى ٱلْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّآ إِيَّاهُ فَلَمَّا نَجَّىٰكُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ ٱلْإِنسَٰنُ كَفُورًا﴾

अनुवाद :- जब समुद्र में तुम पर मुसीबत आती है तो उस एक के सिवा दूसरे जिन - जिन को तुम पुकारा करते हो वे सब गुम हो जाते हैं। किन्तु जब वह तुमको बचा कर शुष्क भूमी पर पहुँचा देता है तो तुम उससे मुँह मोड़ लेते हो। मानव वास्तव में बड़ा कृतध्न है। (सूरा अल इसरा /६७)

और एक स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ○ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴾

अनुवाद :-इनसे कहो तनिक सोच कर बताओ यदि कभी तुम पर अल्लाह की ओर से कोई बड़ी आपदा आ जाती है या अन्तिम धड़ी आ पहुँचती है तो क्या उस समय तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारते हो? बोलो अगर तुम सच्चे हो। सच यह है कि उस समय तुम अल्लाह ही को पुकारते हो फिर अगर वह चाहता है तो उस आपदा को तुम पर से टाल देता है और ऐसे अवसरों पर तुम अपने ठहराए हुए साझीदारों को भूल जाते हो। (सूरा अल अनआम / ४०, ४१)

और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया है :

﴿ وَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُۥ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُۥ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِىَ مَا كَانَ يَدْعُوٓا۟ إِلَيْهِ مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِۦ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلنَّارِ ﴾

अनुवाद :- मनुष्य पर जब कोई विपत्ती आती है तो वह अपने प्रभु की ओर रूजू करके उसे पुकारता है। फिर जब उसका प्रभु उसे अपनी नेमत प्रदान कर देता है तो उस मुसीबत को भूल जाता है, जिस पर वह पहले पुकार रहा था और दूसरों को अल्लाह का समवर्ती ठहराता है ताकि उसकी राह से पथभ्रष्ट करे। (हे नबी) उससे कहो कि थोड़े दिन अपने इन्कार से आनन्द ले ले निश्चय ही तू नरक में जाने वाला है। (सूरा अल जुमर / ८)

फिर अल्लाह ने यह भी फ़रमाया है :

﴿ وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ﴾

अनुवाद :- और जब (समुद्र में) इन लोगों पर एक मोज छत्रों की तरह छा जाती है तो ये अल्लाह को अपने धर्म को बिल्कुल उसी के लिए ख़ालिस करके पुकारते हैं। (सूरा लुक़मान / ३२)

इसलिए जो कोई इस समस्या को जिसकी अल्लाह ने अपनी किताब में व्याख्या कर दी है समझ ले – और वह समस्या यह है कि वे अनेकेश्वरवादी जिन से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध किया था वह सुख की अवस्था में अल्लाह और दूसरों को पुकारते थे, परन्तु दुःख और कष्ट की अवस्था में अकेले अल्लाह

के सिवा जिसका कोई साझी नही किसी और को नहीं पुकारते थे और अपने पूजियों को भूल जाते थे – तो उसको हमारे ज़माने के लोगों के शिर्क और प्राचीन काल वालों के शिर्क के बीच भेद प्रकट हो जाता है।

परन्तु कौन ऐसा व्यक्ति है जिसका दिल इस समस्या को पक्के प्रकार से समझ ले और अल्लाह ही से सहायता की प्रार्थना की जा सकती है।

और दूसरी बात यह है कि प्राचीन काल के अनेकेश्वरवादी अल्लाह के समीपस्थ व्यक्तियों, किसी नबी को अथवा ऋषियों को अथवा फ़रिश्तों को पुकारते थे और इसी प्रकार वृक्षों और पत्थरों को पूजते थे जो अल्लाह के आधीन थे और उसके अवज्ञाकारी नही थे।

परन्तु आज हमारे इस युग के अनेकेश्वरवादी अल्लाह के साथ ऐसे व्यक्तियों को जो लोगों में सब से अधिक अवज्ञाकारी हैं और जो लोग उनको पुकारते हैं वही लोग उनके दुराचार और बदचलनी जैसे व्यभिचार, चोरी, नमाज़ न पढ़ने की कथाएं बयान करते हैं।

और जो व्यक्ति सदाचारी और ऐसी चीजों के संबंध में जो लकड़ी, पत्थर के मानिन्द अवज्ञा की योग्यता नहीं रखते श्रद्धा रखते हों, उसका पाप ऐसे व्यक्ति के पाप

से अधिक हल्का है जो ऐसे इन्सान के साथ श्रद्धा रखता हो जिसके दुराचार और विकार को देखता हो और उसकी साक्षय भी देता है।

अब तुम जान चुके हो कि संदेश वाहक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जिन लोगों के साथ युद्ध किया था इस युग के अनेकेश्वरादियों से ज्ञान और बुद्धी में उत्तम और शिर्क के संबंध में उनसे पीछे थे।

अब ज़रा यह भी जान लो कि आज के यह अनेकेश्वरवादी ऊपर वर्णन की गई बातों पर आपत्ती करते हैं और यह उनकी सबसे बड़ी आपत्ती है। अब इस आपत्ती और उसके उत्तर को ध्यान से सुनो। वह कहते हैं – जिन लोगों के मध्य कुर्आन उतरा था वे लाइलाह इल्लल्लाह की साक्षय नहीं देते थे। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को झूठा समझते थे फिर मृत्यु पश्चात जीवन का अस्वीकार करते थे और कुर्आन को अल्लाह की किताब नहीं मानते थे और उसको मायाकर्म समझते थे , परन्तु इनके विपरीत हम लोग साक्षय देते हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के दूत हैं। और फिर हम कुर्आन को अल्लाह की किताब मानते हैं । और मृत्यु पश्चात जीवन

पर विश्वास रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रमज़ान मास के रोज़े रखते हैं। फिर तुम हमको अनेकेश्वरवादियों के समान कैसे ठहराते हो।

इसका उत्तर यह है कि – सर्व विद्वानों के बीच इस विषय में कोई भिन्नता नहीं है कि जो कोई व्यक्ति एक बात में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पुष्टि करे और दूसरी बात में आपको झूठा जाने तो वह नास्तिक है और इस्लाम में सम्मिलित नहीं रहता। इसी प्रकार यदि कोई कुरआन के एक भाग पर विश्वास करे और दूसरे भाग का खंडन करे, जैसे कोई व्यक्ति तौहीद (अद्वैतवाद) को माने और ज़कात की अस्वीकृति करे अथवा इन सबको माने परन्तु हज की अस्वीकृति कर दे तो ऐसा व्यक्ति भी नास्तिक माना जाएगा।

और देखो कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में कुछ लोग हज के लिए उद्यत नहीं हुए तो अल्लाह ने उनके संबंध में निम्नलिखित आयत नाज़िल की :

﴿ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴾

अनुवाद :- और अल्लाह का लोगों पर यह हक़ है कि

जिसको इस घर तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो वह इसका हज करे, और जो कोई इस आदेश के अनुपालन से इन्कार करे तो उसे मालूम हो जाना चाहिए कि अल्लाह संसार के सारे लोगों से बेपरवाह है। (सूरा आलि इमरान / ९७)

और जो व्यक्ति इन सारी बातों को स्वीकार करे परन्तु मृत्यु पश्चात जीवन को न माने तो सब विद्वानों के मत के अनुसार वह नास्तिक है। और उसका रक्त और धन हलाल है जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡفُرُونَ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُواْ بَيۡنَ ٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيَقُولُونَ نُؤۡمِنُ بِبَعۡضٖ وَنَكۡفُرُ بِبَعۡضٖ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُواْ بَيۡنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ حَقّٗاۚ وَأَعۡتَدۡنَا لِلۡكَٰفِرِينَ عَذَابٗا مُّهِينٗا ﴾

अनुवाद :- जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इन्कार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अन्तर करें, और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे और इन्कार और ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के काफ़िर हैं और ऐसे काफ़िरों के

लिए हमने वह यातना तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी। (सूरा अल निसा / १५० - १५१)

जबकि अल्लाह ने अपनी किताब में स्पष्ट व्याख्या कर दिया है कि जो व्यक्ति कुर्आन की कुछ बातों को स्वीकार करे और कुछ बातों को अस्वीकार करे तो वह पक्का नास्तिक हो जाता है , और यह कि वह उस दण्ड के योग्य है जिसका पहले वर्णन किया जा चुका है। तो इस प्रकार यह संदेह दूर हो गया और यही वह संदेह है जिसका "अहसा"13 नगर के एक नागरिक ने अपनी किताब में जो हमारे पास भेजी गई है वर्णन किया है।

और उसको यह भी बताया जाएगा कि जबकि तू इस बात को स्वीकार करता है कि जो व्यक्ति सब बातों में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सच्चा जाने परन्तु नमाज़ के फ़र्ज होने का इन्कार करे तो विद्वानों के मतानुसार वह नास्तिक है , उसके जान और माल हलाल हैं और इसी प्रकार वह मनुष्य भी मृत्यु पश्चात जीवन के सिवा सारी बातों को स्वीकार करे तो भी वह नास्तिक है। और यदि कोई रमज़ान मास के उपवासों के फ़र्ज होने को अस्वीकार करे इस पर भी वही आदेश लागु होगा। चाहे वह अन्य सब बातों को

मानता हो।

इस समस्या में सब मतों के विद्वानों के मध्य किसी प्रकार की प्रतिकूलता नहीं है। कुरआन ने उसको बयान कर दिया है, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं।

यह बात सभी लोग जानते हैं कि तौहीद वह महान आदेश है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लाए हैं। और फिर यह चीज़ नमाज़, ज़कात, उपवास और हज से भी (सर्वश्रेष्ट) आदेश है।

फिर जब उस व्यक्ति को तो नास्तिक माना जाता है जो इन में से किसी विषय को अस्वीकृति करे यद्यपि वह उन सारी बातों का प्रतिपालन करे जिसको नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने लाया है। परन्तु यदि कोई तौहीद (अद्वैतवाद) को अस्वीकार करे जो ईश्वर के सर्व संदेश वाहकों का धर्म है, तो क्या उसको नास्तिक न माना जाएगा ?

सुब्हानअल्लाह कैसी मूर्खता है, यह!

और इसके अतिरिक्त इस प्रकार भी उत्तर दिया जा सकता है।

यह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथी हैं जिन्होंने बनूहनीफ़ा वंश के साथ युद्ध किया हालंकि वे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम) के काल में इस्लाम लाए थे और वे साक्षय देते थे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नही और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। और वे नमाज़ें पढ़ते , अज़ानें देते थे।

अब यदि कोई कहे कि वे यह भी तो कहते थे मुसैलमा नबी है , हम उत्तर देंगे कि यही हमारा उद्देश्य है। सोचने कि बात है जब कोई मनुष्य किसी साधारण आदमी को नबी के श्रेणी तक ऊँचा उठाए तो वह नास्तिक हो जाता है उसकी जान और उसका धन हलाल हो जाता है और दोनों शहादतों 14 का मानना और नमाज़ पढ़ना उसको कुछ भी लाभ नही दे सकते फिर तुम्हारा क्या विचार है उस व्यक्ति के बारे में जो शमसान और युसूफ़ 15 अथवा नबी के किसी सम्मानित साथी को धरती , आकाशों के अधिपति के श्रेणी तक ऊँचा उठाए हालंकि अल्लाह की ज़ात वास्तविक अत्यंत महान है , जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया।

﴿ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴾

अनुवाद : - अल्लाह इसी प्रकार ठप्पा लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो ज्ञानहीन हैं। (सूरा अल रुम / ५९)

और यह भी कहा जा सकता है कि -

हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने जिन लोगों को अग्नि में जलाने की सज़ा का आदेश दिया था वह इस्लाम के वादी और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के प्रेमी थे और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथियों से विद्या और मान प्राप्त किया था, परन्तु हज़रत अली के संबंध में वैसी ही श्रद्धा रखते थे जैसी यूसुफ़, शमसान के संबंध में उनके समय के लोग रखते थे। सोचने की बात है कि फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथियों ने उनके नास्तिक होने और उनकी हत्या पर कैसे एकता किया था। क्या तुम विचार करते हो कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथी मुसलमानों को नास्तिक बना देते थे, अथवा तुम विचार करते हो कि ताज और उस जैसे व्यक्तियों के बारे में इस प्रकार की श्रद्धा रखने में कोई हानि नही है और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के संबंध में इस प्रकार की श्रद्धा रखने वाले को नास्तिक समझा जाएगा।

इसके अतिरिक्त यह भी बताया जाए कि बनू अबीद अल क़द्दाह जो बनू अब्बास के शासन काल में मराको और मिसर पर प्राप्ताधिकार थे वह साक्षय देते थे कि

अल्लाह के अतिरिक्त कोई आराधित नही और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के संदेश वाहक हैं और इस्लाम के वादी जुमुआ और पाँचों नमाज़ें जमाअत के साथ पढ़ते थे परन्तु जब उन्होंने इस्लाम के कुछ धार्मिक नियमों के प्रतिकूलता का प्रकटन किया तो तमाम विद्वानों ने उनके नास्तिक होने और उनके साथ युद्ध करने और उनके देश के " दारुलहर्ब " होने पर एकता किया और फिर उनसे मुसलमानों ने युद्ध किया , यहाँ तक कि उनके अधीन मुस्लिम देशों को उनके सत्ता से छुड़ा लिया।

और यह भी बताया जाएगा पहले वाले लोगों के नास्तिक होने का कारण कुछ और न था बस यह था कि वे अनेकेश्वरवादी थे और अल्लाह के रसूल और कुर्आन को झुठलाते थे और फिर मृत्यु पश्चात जीवन आदि को अस्वीकार करते थे – फिर इस बात का क्या अर्थ समझा जाएगा कि इस्लाम के सब धर्म शास्त्रों के विद्वानों ने अपनी पुस्तकों में " मुरतद " का आदेश एक अलग अध्याय में वर्णन किया है। और सब जानते हैं कि मुरतद उस मुस्लिम को कहते हैं जो इस्लाम धर्म को स्वीकार करने के पश्चात उससे फिर जाए। और फिर उन्होंने कई प्रकार के मुरतद बताए हैं और इन सब को नास्तिक

कहा है और इनमें से हर एक की जान, माल को हलाल बताया गया है। यहाँ तक कि विद्वानों ने कुछ ऐसी बातों का वर्णन किया है कि उस कर्म कर्ता कि दृष्टि में साधारण होती है, उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति कोई बात ज़बान से कह दे जिस के लिए उस के हृदय में विश्वास नहीं - इसी प्रकार अद्वैतवाद के विरूद्ध शब्द मनोरंजन और परिहास के प्रकार कहे तो भी वह धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।

और इस प्रकार भी उत्तर दिया जा सकता है कि जिन लोगों के संबंध में अल्लाह ने कहा है –

﴿ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ﴾

अनुवादः- वे लोग अल्लाह की क़सम खा कर कहते हैं कि उन्होंने वह बात नहीं कही हालंकि उन्होंने अवश्य ही वह कुफ़्र (अधार्मिकता) की बात कही है उन्होंने इस्लाम ग्रहण करने के पश्चात कुफ़्र किया और उन्होंने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके। (सूरा तौबा / ७४)

क्या तूने नहीं सुना कि अल्लाह ने इन लोगों को केवल एक शब्द कहने के कारण नास्तिक बताया है जबकि वे

अल्लाह के रसूल के समय में उनके साथ होकर जिहाद 16 करते थे, और नमाज़ें पढ़ते थे, ज़कात देते थे, हज करते थे और तौहीद को मानने वाले थे, ऐसे ही वह लोग हैं जिनके संबंध में अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ قُلْ أَبِاللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوا۟ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ ﴾

अनुवाद - उनसे कहो क्या तुम्हारी हँसी - दिल लगी अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल ही के साथ थी, अब बहाने मत धड़ों। तुमने ईमान लाने के बावजूद कुफ़्र किया है। (सूरा तौबा / ६५,६६)

ये वे लोग हैं जिनके संबंध में अल्लाह ने वर्णन कर दिया है कि उन्होंने ईमान लाने के पश्चात कुफ़्र किया है, जबकि ये वे लोग थे जिन्होंने तबूक युद्ध में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ थे। कुरआन के भाष्यकारों ने बताया है कि उन्होंने एक शब्द जो कहा था उसके लिए व्याज किया और कहा है कि हमने वह शब्द परिहास के ढंग से कहा था परन्तु उनका बहाना स्वीकार नहीं किया गया अब इन लोगों के इस आपत्ती पर विचार करो कि वे कहते हैं क्या तुम उन मुसलमानों को नास्तिक कहते हो जो साक्षय

देते हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नही वे नमाज़ पढ़ते और उपवास रखते हैं। फिर उसके उत्तर पर भी विचार करो क्योंकि उन तमाम उत्तरों में यह सबसे अधिक लाभदायक है, जो इन पन्नों में दिए गए हैं। आपत्ती कर्ताओं के युक्तियों में से एक युक्ति में यह भी है जो अल्लाह ने बनू इसराईल के संबंध में वर्णन किया है वह यह है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और संयंम के होते हुए हज़रत मूसा (अलैहि स्सलाम) से कहा था :
हे! मूसा हमारे लिए भी कोई ऐसा ही पूज्य बना दे जैसे कि इन लोगों के पूज्य हैं। (सूरा अल आराफ़ / १३८)
और इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ सम्मानित साथियों ने आप से कहा था –
हमारे लिए ज़ात अनवात 17निश्चित कर दें।
जब उन्होंने वह कहा तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सौगंध खा कर कहा तुम्हारा यह कथन बनू इसराईल के कथन के समान है इन दोनों वृतांतों को दृष्टि में रखकर मुर्शिकीन यह आपत्ती पेश करते हैं और कहते हैं कि बनू इसराईल उपरोक्त शब्द कहने से नास्तिक नही हुए, और इसी प्रकार वे मुसलमान भी " ज़ाते अनवात " निश्चित करने की इच्छा करने से नास्तिक नहीं हुए। इसलिए हम भी इस

प्रकार के शब्द बोलने से नास्तिक नही हो जाते। तुम उनको बताओ इस आपत्ती का उत्तर यह है कि निःसंदेह बनू इसराईल ने ऐसा ज़रूर कहा था परन्तु इसको कर दिखाया नही। और इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिन सम्मानित साथियों ने जो मांग की थी फिर कुछ नही किया।

और इसमें भी कोई प्रतिकूलता नही है कि बनू इसराईल ने वह कार्य नही किया और यदि ऐसा करते तो नास्तिक हो जाते और इसी प्रकार इसमें भी कोई प्रतिकूलता नही है कि जिन को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मनाही की थी यदि वे आपकी बात न मानते और मनाही के पश्चात " ज़ाते अनवात " को बुत बना लेते तो अवश्य नास्तिक हो जाते। यही हमारा उद्देश्य है।

तथापि इस आख्यायिका से यह बात मालूम होती है कि साधारण मुस्लिम बल्कि विद्वान भी किसी प्रकार के अद्वैतवाद फंदे में फंस सकता है जिस के संबंध में वह पूरी जानकारी न रखता हो , इसलिए शिर्क के संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त करना और सावधान रहना और यह जानना चाहिए कि अनाड़ी का यह कहना कि तौहीद को हमने समझ लिया है यह बड़ी मूर्खता और शैतानी चालबाज़ी है और इसके अतिरिक्त यह भी मालूम होता

है कि मुसलमान यदि कुफ़्र की कोई बात कहे जबकि वह न जानता हो फिर उसे सचेत किया गया हो तो उसने उसी समय तौबा कर ली तो वह नास्तिक नही होता जैसा कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से बनू इसराईल के लोगों ने और कुछ मुसलमानों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से शिर्किया मांग की थी परन्तु उनको नास्तिक नही ठहराया गया और एक बात यह भी मालूम होती है कि यद्यपि वह नास्तिक नही होता फिर भी उसको कड़ेपन से डांट-डपट की जाएगी जैसा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ाते अनवात वालों के संबंध में किया था।

और अनेकेश्वावादीयों का एक ,दूसरा संदेह यह है कि वे कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की उस व्यक्ति की हत्या करने पर निंदा की थी जिसने लाइलाह इल्लल्लाह कहा था और उनसे बार - बार पूछा था कि :

क्या तूने उसके लाइलाहा इल्लल्लाह कहने के बाद उसकी हत्या कर दी ?

और इसी तरह की एक और हदीस है18 , आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया :

मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से युद्ध करूं जब तक कि वे साक्षय न दें कि अल्लाह के सिवा कोई आराधित नहीं ।

और उस व्यक्ति की हत्या से जो लाइलाह इल्लल्लाह कहे हाथ रोक लेने के संबंध में आए हुए नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अन्य वचन

इन सारी बातों से इन मूर्खों का उद्देश्य यह है कि जो व्यक्ति लाइलाह इल्लल्लाह कहे न नास्तिक होगा और न उसकी हत्या की जाएगी चाहे वह जो कुछ भी करे अब इन मूर्खों से कहा जाएगा कि यह बात सब लोग जानते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूदियों से युद्ध किया और उनको बंदी बनाया जबकि वे इस बात की साक्षय देते थे कि एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई और आराधित नही। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथियों ने बनू हनीफ़ा वंश के लोगों से युद्ध किया जबकि वे लोग साक्षय देते थे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई आराधित नही और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के पैग़म्बर हैं , और नमाज़ पढ़ते थे और इसलाम के वादी थे और ऐसी ही समस्या उन लोगों की थी जिनको हज़रत अली इब्ने

अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु)ने अग्नि में जलाने का आदेश दिया था। अब ये मूर्ख व्यक्ति कहते हैं कि जो व्यक्ति मृत्यु पश्चात जीवन को न माने वह नास्तिक है और वह मृत्यु दण्ड के योग्य है यद्यपि वह लाइलाह इल्लल्लाह कहे और जो व्यक्ति इस्लाम धर्म के किसी अंश को अस्वीकृत करे तो वह नास्तिक हो जाता है और उसकी हत्या की जाएगी, यद्यपि वह लाइलाह इल्लल्लाह कहे।

यह बात सोचनीय है कि जो व्यक्ति इस्लाम की किसी एक शाख़ को न माने तो लाइलाह इल्लल्लाह की स्वीकृति उसके लिए लाभदायक नही हो सकती तो उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो तौहीद की अस्वीकृति करे जबकि वह ईश दूतों के धर्म का आधार और असल है। वास्तव में अल्लाह के यह शत्रु अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वचनों के अर्थ नही जानते और जानना भी नही चाहते।

जहाँ तक हज़रत उसामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अख्यायिका की बात है उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को जिसने मुसलमान होने का प्रकटन किया तो उन्होंने इस विचार से उसकी हत्या कर दी कि वह अपना धन - प्राण बचाने के लिए अपने इस्लाम का प्रकटन कर रहा है।

परन्तु यथार्थ बात यह है कि यदि कोई मनुष्य अपने इस्लाम का प्रकटन करे तो उससे हाथ रोक लेना आवश्यक है जब तक कि उसकी ओर से कोई ऐसी बात प्रकट न हो जो इस्लाम के नियमों के विरूद्ध हो, और अल्लाह ने इसी विषय में यह आयत उतारी :

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُواْ ﴾

अनुवाद :- हे लोगो जो ईमान लाये हो जब तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ने के लिए निकलो तो मित्र और वैरी में अन्तर करो। (सूरा अलनिसा/ ९४)

इस वचन से यह बात स्पष्ट होती है कि किसी ऐसे आदमी से हाथ रोक लेना और इसके संबंध में गवेषना कर लेना आवश्यक है। हाँ यदि फिर उसकी ओर से कोई ऐसी बात प्रकट हो तो अल्लाह के (समस्या की गवेषना कर लो) आदेशानुसार उसकी हत्या कर दी जाएगी। और यदि इस विचार से कि उसने पहले इस्लाम का प्रकटन किया था उसकी हत्या न की जा सके तो ईशवरादेश का कोई अर्थ न रह जाएगा। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के अन्य वचनों का अर्थ भी वही होगा जो कि हमने वर्णन किया है। और निःसंदेह उस व्यक्ति से हाथ रोक लेना आवश्यक है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) और इस्लाम

का प्रकटन करे परन्तु यदि उसकी ओर से ऐसी बात प्रकट हो जाए जो इस्लाम के विरूद्ध हो तो उससे हाथ रोक लेना आवश्यक नही होगा।

और इसकी युक्ति यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत उसामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा था :

क्या तूने उसको लाइलाहा इल्लल्लाह कहने पर भी उसकी हत्या कर दी ? (बुख़ारी)19

और यह भी कहा था:

मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों से उस समय तक युद्ध करूं जब तक कि वे लाइलाह इल्लल्ला न कहें ।(बुख़ारी , मुस्लिम)

फिर आप ही ने ख़वारिज के समस्या में यह फरमाया :

जहाँ कही तुम उनको पाओ उनकी हत्या कर दो , यदि मैं उनको पाऊं आद जाति के समान उनकी हत्या कर दूंगा। (बुख़ारी , मुस्लिम)

जबकि ये ख़वारिज अल्लाह की उपासना करते , उसका कीर्तन और उसकी आराधना करने में साधारण मुस्लिम व्यक्तियों से प्रतिष्ठित थे। यहाँ तक कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों से विद्याज्ञान प्राप्त किया था परन्तु उनके लिए न

लाइलाह इल्लल्लाह का मानना लाभदायक हुआ न उनकी अधिकतर आराधना और उनका मुसलमान होने का दावा उनके काम आया जबकि इनसे इस्लाम के शास्त्र का प्रतिकूल प्रत्यक्ष हुई।

और इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यहूदियों और आपके साथियों का बनू हनीफ़ा वंश से युद्ध करने का कारण जैसा कि हमने वर्णन किया है यही था।

और इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बनू मुस्तलक़ वंश से युद्ध का संकल्प किया था।जबकि आपको उनमें के एक व्यक्ति ने सूचना दी कि इस वंश के लोगों ने ज़कात 20 देने से इन्कार किया है परन्तु बाद में पता चला कि सूचक ने झूठी सूचना दी थी। इसलिए अल्लाह ने निम्नलिखित आयत उतारी और आपको शुद्ध सूचना दी तब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध का संकल्प समाप्त कर दिया। कुरआन में है :

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوٓا۟ ﴾

अनुवाद :- हे लोगो जे ईमान लाए हो यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो छान-बीन कर लिया करो। (सूरा अल हुजुरात / ६)

और इन सारी बातों से विदित होता है कि उपर्युक्त प्रवचनों में जिनको उन्होंने सबूत में पेश किया है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उद्देश्य वही है जो हमने वर्णन किया है वह नही है जो इन लोगों ने समझा है।

और उनकी एक और आपत्ती भी है और वह यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने एक वचन में फ़रमाया है –

" महाप्रलय के दिन लोग हज़रत आदम (अलैहि स्सलाम) और फिर नूह (अलैहि स्सलाम) और फिर इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) फिर मूसा (अलैहि स्सलाम) और फिर ईसा (अलैहि स्सलाम) के पास जाकर आर्तनाद करेंगे तो यह सर्व संदेश वाहक विवशता प्रकट करेंगे यहाँ तक कि लोग हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचेंगे।

अब अनेकेश्वरवादी कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस वचन से विदित होता है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी से भी सहायता की मांग करना शिर्क नही है। इसका उत्तर इस प्रकार है – पवित्र है वह अस्तित्व जिसने अपने शत्रुओं के दिलों पर मुद्रा लगा दिया है। इसलिए कि हम निःसंदेह प्राणी वर्ग

से ऐसे काम के लिए जिसकी वह शक्ति रखता हो सहायता मांगने के मुन्किर नहीं हैं। जैसा कि अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के आख्यायिका में फ़रमाया है :

﴿ فَٱسْتَغَٰثَهُ ٱلَّذِى مِن شِيعَتِهِۦ عَلَى ٱلَّذِى مِنْ عَدُوِّهِۦ فَوَكَزَهُۥ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ﴾

अनुवाद : - उसकी जाति के आदमी ने शत्रु जाति वाले के विरूद्ध उसे सहायता के लिए पुकारा, मूसा ने उसको एक घूंसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया। (सूरा अल क़सस / १५)

और जैसा कि इन्सान युद्ध या अन्य कार्यों में जिनकी प्राणी वर्ग शक्ति रखते हैं अपने साथियों से सहायता मांगते हैं। और हम तो उन चीज़ों के संबंध में जो कोई शक्ति नहीं रखता आराधना के प्रकार की सहायता मांगने को अवैधानिक मानते हैं जैसा कि लोग सदाचारियों के कबरों के पास जाकर या फिर अन्य स्थानों से उनको उपस्थित या दर्शक मान कर करते हैं। अब जब कि यह बात प्रमाणित हो चुकी है तो अब जानना चाहिए कि महाप्रलय के दिन ईश दूतों से लोगों का सहायता मांगने की वास्तविकता बस यह है कि वे

उनसे यह इच्छा करेंगे कि वे अल्लाह से प्रार्थना करें कि वह लोगों का कार्य कार्मों का हिसाब - किताब तुरन्त ले ले ताकि प्राप्त स्वर्ग का विराम स्थल की कष्ट और व्याकुलता से मुक्ति प्राप्त हो और ऐसा व्यवहार इस जीवन में और यमलोक में उपयुक्त है। और यह ऐसी ही बात है जैसे तू किसी सदात्मा पुरूष के पास जाए वह तुम्हे अपने पास बैठाए और तुम्हारी बात सुने और तुम उससे कहो मेरे लिए अल्लाह से प्रार्थना करो जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मानित साथी आप से यावत्र जीवन में प्रार्थना का विनय करते थे परन्तु आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मृत्यु के पश्चात उन्होंने आप से कदापि ऐसा विनय नही किया बल्कि पूर्वजों ने आप की समाधि पर जाकर अल्लाह से प्रार्थना को अनुचित माना है तो फिर स्वयं आप से प्रार्थना करना कैसे उचित हो सकता है ।

उनका एक दूसरा संदेह है वह हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) से संबंधित है। जब आप को नमरूद 21की अग्नि शाला में डाला गया था तो हज़रत जिब्रील (अलैहि स्सलाम) हवा में उड़ते हुए आए और आपको संबोधित करते हुए पूछा कि क्या आपको मुझ से कोई कार्य है तब हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) ने

कहा मुझे ज़रूरत तो है परन्तु आप से नही अब यह लोग कहते हैं कि यदि सहायता की मांग करना शिर्क होता तो हज़रत जिब्रील (अलैहि स्सलाम) उसको हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) के सामने पेश न करते।

इसका समाधान यह है कि यह भी पहले संदेह के प्रकार का है इसलिए कि हज़रत जिब्रील (अलैहि स्सलाम) ने हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) के सामने जो बात रखी थी वह यह थी कि वह आप को उस कार्य के द्वारा लाभ पहुँचाएं जिसकी वह शक्ति रखते थे इसलिए कि वह थे ही ऐसे जैसा कि अल्लाह ने उन के संबंध मे फरमाया है :

﴿عَلَّمَهُۥ شَدِيدُ ٱلۡقُوَىٰ﴾

अनुवाद :- उसे बड़ी शक्तिशाली ने शिक्षा दी है ।(सूरा अल नजम / ५)

यदि अल्लाह उनको आज्ञा देता कि वह हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) की उस अग्नी को और उसके आसपास की सारी चीज़ों को उठा ले और उसको पूरब या पश्चिम में डाल दें तो वह अवश्य ऐसा करते और यदि अल्लाह उन को आदेश देता कि वह हज़रत इब्राहीम (अलैहि स्सलाम) को उनसे दूर किसी जगह ले जाएं तो वह ऐसा भी कर दिखाते। और इसी प्रकार

यदि हुक्म देते कि वह उनको आकाश की ओर उठा लाएं तो ऐसा भी कर देते।

और यह बात ऐसी है जैसे कोई धनी आदमी हो उसके पास बहुत सा माल हो वह किसी निर्धन को देखकर उससे कहे कि वह उसको ऋण और दान देना चाहता है ताकि वह अपनी आवश्यकता पूरी कर ले परन्तु वह निर्धन ऋण या दान लेने से इन्कार करे और धैर्य से काम ले यहाँ तक कि अल्लाह उसको इस प्रकार रोज़ी दे जिसके लिए वह किसी का आभारी न हो। अब विचार करने की बात है कि इस प्रकार की सहायता की मांग करने में और अल्लाह को छोड़कर औरों से जो उनको पूरा करने की शक्ति न रखते हों, सहायता मांगने में कितना अन्तर है। - काश लोग समझते

अब हम अपने वार्तालाप को एक महत्वपूर्ण विषय के वर्णन पर समाप्त करते हैं यद्यपि वह उपयुक्त विवाद से समझा जा सकता है, परन्तु हम उसकी महानता के कारण और इसलिए भी कि इस विषय में बहुत से लोग ग़लती में पड़ जाते हैं, उसको अलग से बयान करते हैं। इस बात में किसी को भी प्रतिकूलता नही है कि अद्वैतवाद को दिल से सच्चा जानना और ज़बान से प्रकटकरना और उसका प्रतिपालन करना ज़रूरी है।

फिर यदि उसमें से कोई बात कम हो जाए तो वह मुसलमान नही होगा।

और यदि वह तौहीद को जानता हो परन्तु वह उसका प्रतिपालन न करे तो फिरऔन 22 और इब्लीस आदि के समान नास्तिक शत्रु है।

और यही विषय ऐसा है कि इसमें बहुत से लोग ग़लती करते हैं और कहते हैं निःसंदेह यह बात सत्य है हम उसको समझते और उसके सत्य होने की साक्षय देते हैं। परन्तु ऐसा नही कर सकते और हमारे नागरिकों में भी इसका चलन नही है। यह और इस प्रकार के बहाने बनाते हैं । और यह सरल स्वभाव व्यक्ति नही जानता कि कुफ़्र और शिर्क के सर्व संचालक सत्य को अच्छी तरह जानते हैं। परन्तु किसी न किसी बहाने से ही उन्होंने उसको छोड़ दिया है।

जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ﴾

अनुवाद :- उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा सा मूल्य स्वीकार कर लिया। (सूरा अल तौबा / ९)

और अन्य दूसरी आयातों में भी जैसा कि एक स्थान पर अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَعۡرِفُونَهُۥ كَمَا يَعۡرِفُونَ أَبۡنَآءَهُمۡۖ ﴾

अनुवाद :- जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इस क़िबला को (जिसे उपासनादिशा निर्धारित किया गया है) ऐसा पहचानते हैं जैसा अपनी सन्तान को पहचानते हैं। (सूरा अल बक़रा / १४६)

अब यदि कोई व्यक्ति बाह्य रूप में तौहीद के अनुसार व्यवहार करे परन्तु उसको समझता न हो और न उसमें विश्वास रखता हो, तो ऐसा व्यक्ति पाखण्डी (मुनाफ़िक) है और वह वास्तविक नास्तिक से भी निकृष्ट है।

जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ إِنَّ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ فِي ٱلدَّرۡكِ ٱلۡأَسۡفَلِ مِنَ ٱلنَّارِ ﴾

अनुवाद :- विश्वास करो कि कपटाचारी नरक के सबसे नीचे खंण्ड में जाएंगे। (सूरा अल निसा / १४५)

यह एक ऐसा विषय है जो विवरण चाहता है, तुझ पर उस समय ठीक तौर पर प्रकट होगा जबकि तू लोगों की बातों पर विचार करेगा। यह स्पष्ट होगा कि कुछ लोग सत्य को जानते हैं परन्तु वह उस पर दुनिया के घाटे

के डर से या किसी को खुश करने के लिए या झूठे मान के लिए छोड़ देते हैं और तू देखेगा कि कुछ लोग उस पर प्रदर्शन की कल्पना से कार्य करते हैं और इस पर दिल से विश्वास नहीं रखते। परन्तु अब तेरे लिए अल्लाह की किताब की इन दो आयतों को समझ लेना आवश्यक है। अल्लाह ने फरमाया है :

﴿ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾

अनुवाद :- अब बहाने मत घड़ो। तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया है। (सूरा अल तौबा / ६६)

जबकि तूने यह बात अच्छी तरह से जान ली है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ साथी जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ तबूक युद्ध में सम्मिलित हुए थे एक अशुद्ध वचन परिहास के प्रकार कहने पर नास्तिक हो गए। इससे यह प्रकट हुआ कि जो कोई व्यक्ति कुफ़्र की बात ज़बान से निकाले अथवा माल के घाटे के भय से या झूठे मान या किसी व्यक्ति को खुश करने के लिए उसका परिपालन करे तो ऐसे व्यक्ति का पाप उस व्यक्ति के पाप से गम्भीर होगा जिसने कोई बात परिहास के ढंग से कही है। और दूसरी आयत में अल्लाह ने फरमाया :

﴿ مَن كَفَرَ بِٱللَّهِ مِنۢ بَعۡدِ إِيمَٰنِهِۦٓ إِلَّا مَنۡ أُكۡرِهَ وَقَلۡبُهُۥ مُطۡمَئِنُّۢ بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِٱلۡكُفۡرِ صَدۡرٗا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٞ مِّنَ ٱللَّهِ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيمٞ ○ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ ٱسۡتَحَبُّواْ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا عَلَى ٱلۡأٓخِرَةِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ﴾

अनुवाद :– जो व्यक्ति ईमान लाने के पश्चात इन्कार करे (यदि वह बाध्य किया गया हो और दिल उसका ईमान पर सन्तुष्ट हो तब तो ठीक है) किन्तु जिसने दिल की सहमति से इन्कार किया उस पर अल्लाह का प्रकोप है , और ऐसे सब लोगों के लिए बड़ी यातना है।
यह इसलिए कि उन्होंने प्रलोक की अपेक्षा सांसारिक जीवन को पसन्द कर लिया और अल्लाह का नियम है कि वह उन लोगों को मुक्ति का मार्ग नही दिखाता जो उसकी नेमत का इन्कार करे। (सूरा अल नहल / १०६ - १०७)

इन लोगों में से वह व्यक्ति जिसको बाध्य किया गया हो जबकि उसका दिल विश्वास पर संतुष्ट हो नास्तिक नही होगा और इसके अतिरिक्त जो कोई डर से या दूसरे को खुश करने के लिए या स्वदेश के प्रेम में या अपने

पत्नी और संतति की या परिवार की या माल की चाहत से या परिहास या प्रणाली या किसी और कारण से ऐसा करे तो निःसंदेह वह ईमान लाने के बाद नास्तिक हो जाएगा।

यह बात उपरोक्त आयत से दो तरह से स्पष्ट होती है।

एक पहलू यह है कि अल्लाह ने इनमें से उस व्यक्ति को अपवादित किया है जिसको बाध्य किया गया हो जबकि उसका दिल अपने विश्वास पर सन्तुष्ट हो और उसके सिवा दूसरों के लिए अपना क्रोध प्रकट किया है। जैसा कि अल्लाह ने फरमाया है :

परन्तु यदि वह बाध्य किया गया हो , और दिल उसका ईमान पर सन्तुष्ट हो। (सूरा अल नहल / १०६)

और यह बात सब ही जानते हैं कि मनुष्य को किसी बात के कहने या कुछ करने के लिए विवश किया जा सकता है लेकिन जहाँ तक दिल के विश्वास या श्रद्धा की बात है इस पर किसी को बाध्य नही किया जा सकता।

और दूसरी बात अल्लाह का यह वचन है :

यह इसलिए कि उन्होंने परलोक की अपेक्षा सांसारिक जीवन को पसन्द कर लिया। (सूरा अल नहल /१०७)

इस आयत में अल्लाह ने इस बात की व्याख्या कर दी है

कि उनका कुफ़्र और उसकी यातना उनकी श्रद्धा और मूर्खता और धर्मशत्रुता और कुफ़्र से प्रेम के कारण नहीं है बल्कि वास्तविक कारण यह है कि उसको इस संसार की पूँजी सामग्री से कुछ भाग प्राप्त है तो उसने सांसारिक सुख को धर्म पर प्रधानता दी है।

और पाक और सर्वोच्च अल्लाह सर्वज्ञ और प्रभुत्वशाली और बड़ा आदरणीय है। और दरुद भेजे अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद और उनकी संतान और उनके साथियों पर और सलाम भेजे।

---

1 सूरा नूह की आयत (23) की व्याख्या के संबंध में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि ये हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के सदाचारियों के नाम हैं, जब ये लोग मर गए तो शैतान ने लोगों से कहा कि उन स्थानों पर जहाँ वे बैठा करते थे वहाँ उन की मूर्तियां स्थापित कर दो और उनके नाम वही रखो जिन नामों से उनको बुलाते थे। जब तक ये लोग जीवित रहे इन्होंने मूर्तियों की पूजा नहीं की परन्तु जब ये मृत्यु पा गए तो मूर्खता फैल गई और मूर्ति पूजा आरंभ हो गई। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा है कि यही मूर्तियाँ आगे चलकर अरब देश में पूजी जाने लगीं – हज़रत इक्रीमा, ज़हहाक, क़तादह और मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने ऐसा कहा है । (बुख़ारी)

2 इस्लाम से पहले के समय में भी अरब के लोग हज करते थे परन्तु ग़लत पद्धति से करते थे। हज इस्लाम का महत्व स्तंभ है और हर उस मुसलमान

पर इश्वरादिष्ट कर्म है जो अरब देश के प्रसिद्ध नगर मक्का की यात्रा करने और फिर अपने घर लौट कर आने की शक्ति और आसानी रखता हो परन्तु अपनी आयु में केवल एक दफ़ा जबकि लौटने तक भरण पाषण का प्रबंध किया गया हो।

3 यह कि हर तरह की उपासना , अराधना इबादत केवल एक अल्लाह के लिए किया जाए।

3- "लात " नाम की एक मूर्ति थी और इसके सिवा दूसरी दो मूर्तियाँ मनात और उज्ज़ा थीं , पवित्र कुरआन में उनके नाम आए हैं , अरब के लोग उनको पूजते थे।

5 तौहीदे रूबूबियत का अभिप्राय यह है कि अल्लाह ही को सारे संसार और सारी चीजों का पालन पोषण करने वाला माना जाए।

6 इस वचन का शाब्दिक अर्थ यह है " कोई आराधित नहीं किन्तु अल्लाह "

7 इसका अर्थ सरदार , मान्य , स्वामी है।

8 इस्लाम धर्म में प्रवेश प्राप्त करने के इस वचन का अर्थ है " अल्लाह के सिवा कोई आराधित नहीं

9 एक मुसलमान व्यक्ति को जानना चाहिए कि ग्रंथों की अधिकता और भिन्न भिन्न विद्याओं और भाषाओं का नाम प्रमाण नहीं है बल्कि प्रमाण वही है जो सत्य हो और बस।

10 इसका अर्थ वह व्यक्ति हो सकता है अथवा वह उत्तर भी हो सकता है।

11 रूबूबियत का अर्थ है : यह बात मानना कि अल्लाह ही सारे संसार का पालनहार और पोषक है।

12 (शाफ़िअ) का अर्थ है , सिफारिश करने वाला और (मुशफ़्फ़ा) का अर्थ है वह व्यक्ति जिसकी सिफारिश स्वीकार की जाए।

13 यह सऊदी अरब देश मे पूर्वी प्रान्त का एक मुख्य नगर है।

14 तौहीद और मुहम्मद (स०अ०स०) के अंतिम ईशदूत होने की साक्षय

देना।

15 शमसान , ताज और यूसुफ़ उन लोगों के नाम हैं जिनको अल्लाह का साझी ठहराते थे और उनको पूजा जाता था।

16 धार्मिक युद्ध।

17 अनवात नौत का बहुवचन है जिसका अर्थ है लटका हुआ, वैसे वह एक वृक्ष था लोग उससे पवित्र मानकर विभूति पाने का विश्वास रखते थे।

18 हदीस का शाब्दिक अर्थ " नवीन वस्तु " है परन्तु इस्लाम की परिभाषा में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) के प्रवचनों और कर्मों को " हदीस " कहते हैं।

19 <u>बुखारी</u> हदीस की एक प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम है। हदीस अल्लाह के रसूल सलल्ललाहु अलैहि व सल्लम के प्रवचनों को कहते हैं। इस प्रकार की अनेकों किताबें हैं। इनमें से कुछ मशहूर किताबों के नाम निम्नलिखित हैं :
१- सही बुख़ारी २- सही मुस्लिम ३- सुनने तिर्मिज़ी ४- सुनने अबूआवूद ५- सुनने नसाई ६- सुनने इब्ने माजा।
इनमें से अधिकतर ग्रंथ उनके सम्पादकों के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

20 ज़कात उस माल को कहते हैं जो हर धनवान मुसलमान पर प्रतिवर्ष अपने माल का एक निश्चित भाग ग़रीबों को देना फ़र्ज है , यह भी इस्लाम के स्तंभों में से एक है।

21 हमारे नबी (स०अ०स०) के पूर्वज हज़रत इब्राहीम (अ०स०) के समय में इराक़ देश का एक अत्याचारी राजा था , हज़रत इब्राहीम (अ०स०) के पिता (आज़र) राजकीय मन्दिर के महापुजारी , मूर्तिपूजक और मूर्तिकार थे परन्तु हज़रत इब्राहीम पैग़म्बर और शिर्क के विरोधी थे इसलिए राजा ने आपको अग्निशाला में डाला था।

22 मिसर देश के प्राचीन काल के सम्राटों का लकब फिरऔन था जो मूसा (अ०स०) के ज़माने का एक क़िब्ती राजा था।